गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2021-2023

मासिक गोलालारीय **दर्शन**

सफलता के 13 वर्ष

अपनों के साथ अपनी बातें

लेट पोस्टिंग

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com
9406744064

सेवा में,

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 13 अंक : 5 पृष्ठ संख्या : 10 माह – 15 मार्च 2022 सहयोग राशी 1100/– देकर सदस्य बनें ।

अद्भुत, अद्वितीय, अकल्पनीय, अविस्मरणीय

भव्य, दिव्य, अलौकिक और अद्भुत 500 फीट की पहाड़ी पर स्थित दुनिया के सबसे बड़े जैन मंदिर के सामने खड़े होने पर यह शब्द मुंह से बरबस ही फूट पड़ते हैं । यह मंदिर नहीं बल्कि जीवंत हो उठा 1500 वर्ष का इतिहास हैं जिसने कुंडलपुर को कोणार्क, दिलवाड़ा सोमनाथ और जगन्नाथ जैसे जग प्रसिद्ध मंदिरों की कतार में खड़ा कर दिया है। यह सभी नागर शैली के सदियों पुराने मंदिर हैं पत्थरों की नक्काशी में मध्यप्रदेश के खजुराहो की विश्व धरोहर कंदारिया मंदिर की शैली का यह दूसरा मंदिर है जिसे सदियों तक याद किया जाता रहेगा । अयोध्या में निर्माणाधीन राम मंदिर भी इसी शैली में तैयार हो रहा है । राजस्थान के 12 लाख टन उत्कृष्ट पत्थरों में कारीगरों ने जैसे जाने फूंक दी हैं। नक्काशी हमें 1500 साल पहले अस्तित्व में आई नागर शैली की याद दिलाती है। हर पत्थर पर अक्स ऐसे उकेरे गए हैं जैसे वे कुछ कहना चाहते हैं जैन मुनियों से लेकर अन्य संतों की मुद्राएं जैसे आशीर्वचन देने को उद्धत हैं।

64 स्तंभों में बिना सीमेंट गारा के खड़े 189 फीट ऊंचे इस मंदिर के भीतर के गर्भगृह, नृत्य मंडप, रंग मंडप, गुण मंडप और उनके गुबंद के भीतरी हिस्से में महीन कारागारी उत्कृष्ट स्थापत्यकला का नमूना है । इस आलौकिक मंदिर को सजाने के लिए ऐतिहासिक पहल की जा रही है 1008 भगवान आदिनाथ जी के मुख्य मंदिर में 189 ऊंचे शिखर पर 200 किलोग्राम सोने का कलश चढ़ाया जाएगा।

तप कल्याणक के समय 2 लाख श्रावक इस पावन धरा पर इस महोत्सव का आनंद ले रहे थे । आचार्य श्री के सानिध्य में यह 68वां पंचकल्याणक महोत्सव है और बुदेलखंड की धरती पर यह 17वां आयोजन है 275 से अधिक मुनिराज आर्यिका के पीछे ब्रह्मचारी दीदियों के सानिध्य में इस महोत्सव ने जैन समाज के लिए एक अद्भुत मिसाल कायम की है ।

12 फरवरी से 24 फरवरी तक आयोजित महोत्सव में भगवान के पंचकल्याणक की प्रक्रिया 16 फरवरी से 23 फरवरी तक नित्य पूजन और छोटे बाबा के आशीर्वचन के साथ प्रारंभ हुई । प्रतिदिन धार्मिक क्रियाओं की मनभावन प्रस्तुतियों ने श्रावक को पंडाल से उठने का अवसर ही नहीं दिया 24 तीर्थंकरों के पहली बार एक साथ पंचकल्याणक का यह पहला अवसर था। सोमवार को आचार्य श्री के सानिध्य में 1 किलोमीटर की लंबी घट यात्रा में हजारों श्रावक शामिल हुए, 24 श्रावक तीर्थंकरों की प्रतिमाएं सिर पर रखकर चल रहे थे शोभायात्रा में 15 अश्वरोही के साथ 21 बग्घियां चल रही थी । पहली बग्घी में ध्वजारोहणकर्ता श्री अशोक पाटनी परिवार व दूसरी बग्घी में कुंडलपुर समारोह अध्यक्ष श्री संतोष सिंघई सपत्नीक विराजमान थे । इसके बाद पंचकल्याणक महोत्सव के मुख्य पात्र बग्घियों में सवार थे । गर्भ कल्याणक के दिन श्रावण धर्म रूपी रत्नों की बारिश की कुछ बूंदों को संचित करने के लिए दौड़े चले आ रहे थे ।

गर्भ कल्याणक के दिन आदिनाथ मंदिर में तीन चौबीसी प्रतिमा विराजमान की गई महोत्सव प्रांगण पर हेलीकॉप्टर के द्वारा पुष्प वर्षा की गई । जन्म कल्याणक महोत्सव में भगवान के जन्म की बधाईयों के उद्घोष से गूंज उठा । कुबेर ने रत्नों की वर्षा की, शोभायात्रा में लाखों श्रावक मौजूद थे । तप कल्याण के दिन नया इतिहास रचा गया, पूरे महोत्सव क्षेत्र में पैर रखने की जगह भी नहीं बची थी । 5733 प्रतिमाओं के साथ 18 ब्रह्मचारी क्षुल्लक बने और 176 बहनों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का नियम लिया । ज्ञान कल्याणक के पावन दिवस पर आचार्य श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि **'ना मत कहो, हां की कूबत देखो, परिणाम देखकर दंग रह जाओगे, इसी हाँ ने इतना बड़ा आयोजन कर दिया है।'** आचार्य श्री ने आगे कहा कि चिकित्सा और इंजीनियर की शिक्षा हिंदी में कराई जाना चाहिए भाषा विकास से ही देश सशक्त बनते हैं । उन्होंने फ्रांस और चीन देशों का उदाहरण देते हुए कहा भारत का संविधान अपनी संस्कृति के अनुरूप नहीं है ।

मोक्ष कल्याणक के दिन 24 तीर्थंकरों का निर्वाण मंच बनाया गया। प्रात: 6.24 पर चौबीसों तीर्थंकर का मोक्षगमन हुआ । श्रावकों ने पूजन कर निर्वाण लाडू चढ़ाये । दोपहर में 27 सोने चांदी सजे हुए गजरथों की फेरी का अनुपम दृश्य कोई नहीं भूल सकता है । एरावत हाथी से लेकर दिव्य घोष और मुनि संघ की मौजूदगी में 3 घंटे में 7 परिक्रमा पूर्ण हुई। रथों पर सवार इंद्र इंद्राणी ने रत्नों की वर्षा की हर कोई रत्न मिलने की इच्छा लेकर झोली फैलाये फेरी मार्ग में खड़ा था जितने लोग फेरी में चल रहे थे उससे 10 गुना लोग पंडाल के चारों ओर जमा थे। इस पर अभी तक 400 करोड़ रु खर्च हो चुका है और आगे 200 करोड़ खर्च होने का अनुमान है।

गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास

महानुभाव

स्नेहिल आमंत्रण सम्मान समारोह एवं स्नेहभोज

गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास, इन्दौर द्वारा दिनांक 27 मार्च 2022, रविवार को आयोजित होने वाले सम्मान समारोह व स्नेह भोज में आपको सपरिवार सादर आमंत्रित करता है ।

आगमन एवं स्वल्पाहार : प्रात: 9 बजे
सम्मान समारोह : प्रात: 10.30 बजे से ❋ तत्पश्चात स्नेह भोज

स्थान : प्रारंभ गार्डन, होटल निर्वाणा के पास, एम.आर. 10, कुम्हेड़ी